Bihar Board Class 8 Hindi Notes Chapter 15 दीनबन्धु 'निराला'

दीनबन्धु 'निराला'

संक्षेप-आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रतिष्ठित कवि श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी "निराला" जी को दीनबन्धु "निराला" कहा जाता है। सचमुच में दीनबन्धु थे। दीन-दुखियों पीड़ित के साथ बन्धुत्व की भावना रखने वाला उसका – यथोचित सेवा, सहायता करने वाला ही दीनबन्धु कहला सकता है।

महाकवि रहीम ने तो दीनबन्धु को दीनबन्धु भगवान कहा है-जो रहीम दीनहिं लखै, दीनबन्धु सम होय । जो निराला जी पर अक्षरश: सही बैठता है। वे दीनों पीड़ितों को खोज-खोजकर सेवा सहायता किया करते थे। भगवान ने आकर्षक व्यक्तित्व के साथ उदार मन भी "निराला" जी को प्रदान किया था। स्वयं भोजन करने वक्त भी यदि कोई याचक आ जाता तो अपना भोजन याचक को खिलाकर स्वयं तृप्त हो जाते थे । साहित्य साधना करने के कारण अर्थाभात तो सदैव रहा ही लेकिन जो कुछ भी आय होता उसे गरीबों में बाँटकर

उन्हें आनन्द आता था । वे भले स्वयं पुराना कपड़ा पहने हों लेकिन
निर्वस्त्र . दीन को देख वे नया वस्त्र ही दे दिया करते थे । दीनों की
सहायता के कारण ही उनके घर में गद्दा आदि आरामदायक उपस्कर
नहीं खरीद पाये। . परमात्मा ने उनकी मनोवृत्ति और प्रवृत्ति समझकर ही कलकत्ता के श्री रामकृष्ण मिशन "वेलूर मठ" में सेवा के लिए नियुक्त किया था।

"निराला" जी "यथा नियुक्तऽस्मि तथा करोमिं" के कथन को पूर्णत: पालन किया करते थे। प्रतिवर्ष वेलूर मठ में परमहंस जी तथा विवेकानन्द जी की जयन्ती के अवसर पर दीन बन्धुओं (दरिद्रनारायणों) के भोजन कराने वक्त पूर्णत: दीनबन्धु दिखते थे। बड़े लगन और प्रेम से दीनों को भोजन कराते देख सब लोग उन पर मुग्ध हो जोते थे। "निराला" जी की मातृभाषा हिन्दी थी लेकिन बंगाली भाषा भी मातृभाषा के समान ही बोलते थे जिसके कारण बंगाली लोग उन्हें बंगाली समाज का ही आदमी मान उनसे कवीन्द्र "रवीन्द्रनाथ" के गीत सुनकर प्रसन्न हो जाते थे।

आकर्षक रूप, लम्बे-तगड़े शरीर, सुन्दर स्वास्थ्य विलक्षण मेघाशक्ति, ' 'मनोहर आवाज, दयाई स्वभाव चिन्तनशील मस्तिष्क, सुहावनी लुभावनी आँखें . सुन्दर अनार की तरह दन्तपंक्ति धुंघराले बाल छोटा मुख-विवर, पतली होठ,

चौड़ी छाती इत्यादि सब प्रकार से भगवान ने उनको आकर्षक बना दिया था। लेकिन वे विषय-वासना से बिल्कुल दूर रहे। साहित्य साधना के इच्छुक

नर-नारी प्राय: उनके इर्द-गिर्द रहा करते । लेकिन वे किसी को आँख उठाकर भी नहीं देखते थे।

देश की आर्थिक विषमता पर यदि वे कभी बोलते थे तो वे अत्यन्त उग्र साम्यवादी जैसा प्रतीत होते थे। जबकि उग्रता रूपी अवगण उनमें लेश मात्र भी नहीं था।

https://www.evidyarthi.in/

कलकत्ता जैसा शहर जहाँ धनकुवेरों (धनवानों) की कमी नहीं था लेकिन लँगड़े-लूले, अन्धी कोढ़ी और निकम्मे दीनबन्धु के प्रति ध्यान देने वाले केवल “निराला” जी थे। जबकि स्वस्थ व्यक्ति की सहायता करने को वे उन्मुख नहीं थे।

लेकिन जब कोई माँग देता जो चीज माँग देता “निराला” जी उसकी याचना पूर्ण करने की कोशिश करते थे। उपलब्ध नहीं होने पर हाथ जोड़कर ही सबको संतुष्ट कर दिया करते थे। भले उनके पास पैसों की कमी हो लेकिन दीनों के मन को आनन्दित करने में ही आनन्द प्राप्त करते थे।

कभी-कभी तो लालची आदमी भी उनके दान-शील स्वभाव से आकर्षित होकर लाभ पा लेता था लेकिन उनके मन को कभी ठेस नहीं पहुँचा।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि–’निराला’ जी अपनी आवश्यकता को भूलकर दूसरों की आवश्यकता पूरा करने में आनन्द पाते थे।

निराला की उदारता से प्रभावित कलकत्ता के रिक्शे वाले हो या ताँगावाले सभी साग्रह उनको बिठाते थे। रास्ते के गरीब लोग भी उन्हें चलते-फिरते आशीष दिया करते थे।

धन्य थे ‘निराला’ जी साहित्य जगत में उनके जैसा विशिष्ट गुण वाले और आचरण वाले कवि या लेखक नहीं दिखते। . जिस व्यक्ति में अन्य लोगों से विशिष्ट गुण ही वैसे लोगों का स्मरण करना ईश्वर की दी गई वाणी को सार्थक करना है।

https://www.evidyarthi.in/